गाँधी-वाणी

लेखक एवं प्रस्तुत कर्ता

गंगा प्रसाद गुप्त

एम० ए०, बी० एस-सी०, एल० टी०,

विज्ञान अध्यापक

राजकीय इण्टर कालेज,

फतेहपुर

मुद्रक
विभाकर मुद्रणालय,
३१६, अतरसुइया,
इलाहाबाद-३

प्राक्कथन

महात्मा गाँधी जन्म शताब्दी समारोह के सम्बन्ध में शासन द्वारा बापू की १०० सूक्तियाँ विद्यार्थियों को सुनाने के लिये प्राप्त हुयीं। प्रधानाचार्य जी ने यह कार्य मुझे सौंपा। विद्यार्थियों के सामने प्रतिदिन एक नयी सूक्ति सुनाकर मैं उसकी व्याख्या करता था। इसी बहाने मुझे महात्मा जी के विषय में दो-तीन पुस्तकें पढ़ने का अवसर मिला। इससे मुझे बड़ी शान्ति मिली। मेरे सहयोगियों एवं शिष्यों ने मेरी बात सुनी, सराही एवं ग्रहण की। अतः मुझे इसे एक पुस्तिका का रूप देने की प्रेरणा मिली। यदि मेरे शिष्य गाँधी-दर्शन को अपना सकें तो मैं अपना प्रयास सफल समझूँगा। अन्त में मैं प्रधानाचार्य जी का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने यह गुरुतर कार्य करने के योग्य मुझे समझा।

दीपावली ९-११-६९ —गंगा प्रसाद गुप्त



गांधी जी 'विद्यार्थी रूप में'

सत्य

१. सत्य ही ईश्वर है

ईश्वर के अनेक नाम हैं। सत या सत्य उनमें से सर्वोपरि नाम है। अत: सत्य ही ईश्वर है। आदि काल से हम ईश्वर को सच्चिदानंद कहते आये हैं। सच्चिदानंद का अर्थ है सत्+चित्+आनन्द। सत्य वही है जो सदैव रहे अथवा अमर रहे। जहाँ इसका ज्ञान होता है वहाँ आनन्द तो आप से आप हो जाता है। अंग्रेजी में भी कहा गया है—

God is truth and truth is God.

२. सदैव सत्य बोलो

नहि असत्य सम पातक पुन्जा।
गिरि सम होहिं कि कोटिक गुन्जा॥

—महात्मा तुलसी दास

ऋषि मुनियों ने अपने जीवन का अनुभव इस प्रकार की कविताओं एवं लोकोक्तियों के रूप में बहुजन हिताय बहुजन सुखाय रख दिया है। मिथ्या भाषण सब दुखों की जड़ है। सत्य बोलना पुण्य है। सुख सन्तोष का मूल है। सत्य को जब हृदय में धारण करोगे तो अन्य विकार स्वयमेव निकल जायेंगे। जब किसी बर्तन में जल भरा जाता है तो वायु आप से आप निकल जाती है।

३. सम्पूर्ण सत्य से सब कुछ सम्भव है

'सत्याग्रह' गाँधी जी के स्वतन्त्रता आन्दोलन का दूसरा नाम था उन्होंने बतलाया कि किसी अच्छे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये साधन भ अच्छे होने चाहिये। बालक गाँधी पर सत्य हरिश्चन्द्र नाटक का अमि प्रभाव पड़ा और वे जीवन पर्यन्त इसी सिद्धान्त पर चलते रहे। राज नीति में कभी-कभी असत्य का सहारा लेने से काम बन जाता है, किन गाँधी जी ने इसे असत्य सिद्ध कर दिखाया।

सत्य का अभ्यास करने के लिए बचपन सबसे अच्छा समय है ता बड़े होने पर यह आदत विशाल वृक्ष बने और समाज को शीतलत प्रदान करे।

४. जीवन सत्य पर निर्भर है

उमा कहउँ मैं अनुभव अपना।
सत् हरिभजन जगत सब सपना।

—रामचरित मानस

हमाच्छादित कैलाश पर्वत पर भगवान शंकर ने पार्वती जी को उपदेश दिया कि इस असार संसार में हरि का भजन ही सार है और

सत्य बोलना ही हरि का भजन है। सत्य ही जीवन है। जीवन सत्य पर निर्भर है। असत्य भाषण सामाजिक एवं आध्यात्मिक मृत्यु है।

५. सत्य के लिये निर्भय होना आवश्यक है

'सदाचार' का अर्थ है सत्य पर आचरण करना। सदाचार पालन करने वाला महापुरुष सदाचारी कहलाता है। सत्य ही सनातन है, अमर है अतः ईश्वर है। जिसके हृदय में ईश्वर का निवास है, जो सदाचारी है, उसको भय कहाँ ? वह निर्भय होता है। अतः सत्य के लिये निर्भय होना आवश्यक है।

महाराज अशोक के समय में तो 'सत्य' को राजाश्रय प्राप्त था। उन्होंने अपने स्तंभों में "सत्यमेव जयते" लिखवा दिया था। सौभाग्य से कांग्रेस सरकार ने भी उनका स्तंभ अपने नोटों एवं सिक्कों पर बनवाकर सत्य के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की है।

६. सत्य का पुजारी निराश नहीं होता है

उपर्युक्त विषय में आज आप को एक लघु कथा सुनायेंगे। एक राजा था। उसका एक सज्जन मंत्री था। किन्तु अन्य उससे ईर्षा रखते थे। एक

बार राजा शिकार करने गये। वहाँ उनकी एक उँगली कट गई। मन्त्री ने कहा ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा करता है। इस कटु सत्य को लेकर अन्य मन्त्रियों ने राजा के कान भरना प्रारम्भ किया और कहा, 'महामन्त्री को ऐसा नहीं कहना चाहिये'।

राजा क्रुद्ध हुये और आज्ञा दी कि महामात्य को राज्य के बाहर निकाल दिया जाय। अन्य चाटुकार मन्त्री अब राजा के साथ रहने लगे। एक बार फिर शिकार की योजना बनी। इस बार राजा भूल से अन्य राज्य में जा पहुँचे और बन्दी बना लिए गए। उस राज्य के संविधान के अनुसार सीमा का अतिक्रमण करने वाले को राज्य की देवी पर बलि कर दिया जाता था। अतः इस राजा के लिये यही राजाज्ञा हुई।

अन्तिम बलिदान का समय आया। पुजारी ने देवी की आराधना की और राजा के शरीर का निरीक्षण किया। किन्तु उँगली कटी होने के कारण उन्हें बलिदान के अनुपयुक्त पाया। अतः मन्त्री का बलिदान कर दिया गया और अंग-भंग राजा को देश के बाहर ढकेल दिया गया।

खिन्न हृदय राजा स्वदेश लौटे। उँगली का कटना वरदान सिद्ध हुआ। अतः राजा ने अपने सज्जन मन्त्री को पुनः आमन्त्रित किया। मन्त्री सेवा में आये और कहा "ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा करता है। यदि मैं आप के साथ रहता तो मेरा बलिदान हो जाता। देश निष्कासन से मैं निराश नहीं था। उसे ईश्वर की इच्छा समझ कर मैं सदैव प्रसन्न था।"

७. सत्य में सब बातों का समावेश होता है

आत्मा नदी संयम पुण्य तीर्थाः,
सत्योकाः शीलतटाः दयोर्मिः ।
तत्राभिषेकं कुरु पाण्डु पुत्रः,
न वारिणा शुद्धयति चान्तरात्मा ।
—महाभारत

यक्ष ने युधिष्ठिर को उपदेश दिया था कि आत्मा सत्य बोलने से निर्मल होती है। 'सत्यं वद' आदि मन्त्र हमारे वेदों में हैं। सत्य बोलने पर आदि काल से ही हमारे धर्म ग्रन्थ आदेश देते आये हैं। मृत्यु के उपरान्त अर्थी के साथ "राम नाम सत्य है" ऐसा लोग कहते चलते हैं। अतः सत्य बोलना तो हमारी संस्कृति का अंग है।

८. सत्य से प्रेम मिलता है

सत्यं, शिवं, सुन्दरम्

कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ टैगोर का यह मन्त्र भारत में घर-घर में व्याप्त है। सत्य की कल्पना भारत में अति प्राचीन है। गाँधी जी ने केवल उसे अपने जीवन में ढाला है। यह प्रकाश उन्हें श्रीमद्भगवतगीता से प्राप्त

हुआ है। श्री कृष्ण जी ने गीता के पन्द्रहवें अध्याय में अर्जुन को उपदेश दिया कि—

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियं हितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ।।

उत्तेजना न उत्पन्न करने वाले, सत्य, प्रिय हितकारी वचन बोलना, धार्मिक ग्रन्थों का पठन एवं राम नाम का जप वाणी का तप कहलाता है।

६. सत्य से मृदुलता प्राप्त होती है

वही प्रज्ञा का सत्य स्वरूप,
हृदय में बनता प्रणय अपार,
लोचनों में लावण्य अनूप,
लोक सेवा में शिव अविकार।

—सुमित्रानन्दन पन्त

ज्ञान, प्रेम, सौंदर्य सभी सत्य के अपर रूप हैं। कवि ने इन सभी भावों का समन्वित रूप सामने रक्खा है। अतः आप लोग सत्य को अपने हृदय में ढालने का प्रयास करें तभी आप उसके अलौकिक प्रभाव को समझ सकेंगे। सत्य से तरल होने के कारण ही महाराज हरिश्चन्द्र तथा धर्मराज युधिष्ठिर जीवन भर कष्ट झेलते रहे—पर अन्त में सत्य की विजय हुयी।

१०. सत्य कहना और करना मेरा स्वभाव हो गया है

यह विज्ञान-कालेज है। वैज्ञानिक कभी असत्य बात स्वीकार नहीं करता। इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलिलियो ने अपने प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया कि पृथ्वी सूर्य के चारो ओर चक्कर लगाती है। किन्तु उनके धर्म ग्रन्थ बाइबिल में लिखा है कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता है। उस सत्य के पुजारी को धर्म ग्रन्थ के विपरीत बात कहने के कारण मृत्यु दंड भोगना पड़ा।

विज्ञान के विद्यार्थी का उद्देश्य है—

सत्य की खोज, केवल सत्य की खोज, निरावरण सत्य की खोज।

आशा करता हूँ कि तुम साहसी वैज्ञानिक बनोगे, भीरु लकीर के फकीर कदापि नहीं।

प्रतिज्ञा करो—

सत्य कहना और करना मेरा स्वभाव हो गया है।

११. पृथ्वी सत्य पर टिकी हुई है

आप सभी विद्यार्थी हैं। विद्या मन्दिर में रहते हैं। विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती जी हैं। आपने उनकी सौम्यमूर्ति देखी

वह हंस वाहिनी हैं—

हंस नीर क्षीर विवेक रखता है अतः वह सत्य का पुजारी है।

वह वीणा धारिणि हैं—

अतः सौन्दर्य की मूर्ति हैं।

वह पुस्तक धारिणि हैं—

अतः कल्याणकारिणी हैं।

इस प्रकार सरस्वती जी सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की मूर्ति हैं।

आप सभी सत्य व्रत धारण करके, कल्याणकारी एवं सुन्दर बनकर इस देवी के योग्य पुजारी बनें।

१२. सत्य के पालन में ही शान्ति है

बहुत दिनों से हिन्दू समाज सत्यनारायण की कथा सुनता आ रहा है। जिसका अर्थ है सत्य नारायण को हृदय में स्थापित करना। सत्य व्रत का पालन करना। कथा तो केवल उसका महात्म्य मात्र है। गलत ढंग से धन उपार्जित करके चाँदी के कुछ टुकड़े दान करने से सत्य नारायण की वास्तविक पूजा नहीं होती। शान्ति तो सत्य के पालन से ही प्राप्त हो सकती है।

१३. सत्य के बिना शुद्ध ज्ञान नहीं हो सकता

आज सत्य के विषय में कुछ पाश्चात्य देशों की सम्मतियाँ आपके सामने रक्खूंगा। पश्चिमी देश यूनानी सभ्यता से बहुत प्रभावित रहे। वहाँ मुख्य तीन दार्शनिक हुये हैं—

१. सुकरात

२. प्लेटो

३. अरस्तू

अरस्तू ने कहा था "कला वही है जिसमें तीन गुण हों।

The true, The good, The beautiful

सत्यं, शिवं, सुन्दरम्

उसी विचार को महाकवि कीट्स ने इस प्रकार कहा–

Beauty is truth, Truth is beauty,
That all ye know on earth.
And all ye need to know.

—Philosopher poet Keats.

१४. सत्य साध्य है अहिंसा साधन है

सत्य बोलने से काम, ईर्षा, द्वेष, लोभ आदि अवगुण नष्ट हो जाते हैं। ये अवगुण तो झूठ के अन्धकार में ही पनपते हैं। हिंसा करके आप सत्य का पालन नहीं कर सकते। अतः सत्य व्रत के लिये अहिंसा व्रत साधन है। अहिंसा व्यापक वस्तु है। हम हिंसा के बीच घिरे हुये पामर प्राणी हैं। यह बात गलत नहीं है कि जीव जीव पर जीता है। यदि इस अवस्था में वह हिंसा से बचने का प्रयत्न करता है तो वह ईश्वर की कृपा है। वह सत्य व्रत का पालन है। दोनों गुण एक दूसरे के पूरक हैं। इनसे करुणा बढ़ती है। इनसे संयम की वृद्धि होती है। इनसे आत्मा को शान्ति मिलती है।

१५. सत्य गोपनीयता से घृणा करता है

सत्य के अनन्यतम पुजारी हैं-

१. महाराज दशरथ

२. सत्यवादी महाराज हरिश्चन्द्र

३. महात्मा गांधी

सभी पूज्य हैं। आपके पास यह तो अच्छी कसौटी है। जिस बात ो आप दूसरे से न कह सकें उसे न करें। सत्य कहने में कोई डर नहीं। त्य के लिये गोपनीयता की आवश्यकता नहीं। सत्य तो सूर्य के समान काशमय है।

अहिंसा

१६. अहिंसा प्रेम की पराकाष्ठा है

परम धर्म स्रुति विदित अहिंसा,
पर निन्दा सम अघ न गरीसा। —गोस्वामी तुलसीदास

अहिंसा का अर्थ है अपने सहयोगियों के प्रति असीम प्रेम। प्रेम का र्थ है दूसरों के लिये कष्ट सहने की अपार क्षमता। गांधी जी ने दूसरों ो लाभ पहुँचाने के लिये असीम कष्ट सहे। दूसरों को स्वतन्त्र करने के ये स्वयं बीसों वर्ष जेल में रहे। यद्यपि प्रकाश चला गया है किन्तु नकी विचार-धारा युगों तक विश्व का पथ-प्रदर्शन करती रहेगी।

१७. हिंसा का उत्तर अहिंसा से दिया जा सकता है

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्च इदं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न बिजानीतो न अयं हन्ति न हन्यते ॥ —श्रीमद्भगवत गीता

आत्मा अजर अमर है। उसकी हिंसा नहीं की जा सकती। अतः हिंसा पर विश्वास करने वाले अज्ञानी हैं। गांधी जी द्वारा बिना शस्त्र प्रयोग के स्वतन्त्रता पाना उनके मनोबल की विजय है। भारत का स्वतन्त्रता संग्राम विश्व में अद्वितीय है। गांधी जी ने हिंसा पर आधारित अपार ब्रिटिश सेना का उत्तर अजेय अहिंसा द्वारा दिया।

१८. अहिंसा वीरों का आभूषण है

न जायते म्रियते वा कदाचिन्,
न अयं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजौ नित्यं शाश्वतोयं पुराणे,
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।

—गीता

धरती के एक भी कण को मिटा देने की शक्ति किसी में नहीं है। अतः तुम इतने पराक्रमी बनो कि कोई तुम पर आक्रमण करने का विचार भी न कर सके। तुम्हारी स्थिति वन में शेर के समान होनी चाहिये। क्षमा वही कर सकता है जो क्षमा करने की सामर्थ्य रखता है। उपवास वही करता है जो भोजन करने की सामर्थ्य रखता है। इसी प्रकार अहिंसा व्रत वही कर सकता है जो वीर है।

१९. अहिँसा वीरों का धर्म है

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनि नाथ ।
हानि, लाभ, जीवन, मरण, जस अपजस विधि हाथ ॥

—रामचरित मानस

जीवन मृत्यु पर मनुष्य का नहीं ईश्वर का नियन्त्रण होता है। अतः धीर, ज्ञानी, वीर पुरुषों को अहिंसा पर अमिट विश्वास रखना चाहिये। अहिंसा वीरों का धर्म है, कायरों का नहीं। जिसमें शक्ति व सामर्थ्य ही नहीं वह अहिंसा के आभूषण से कदापि आभूषित नहीं हो सकता।

२०. अहिँसा उच्चतम वीरता है

महाराज पृथ्वीराज ने मुहम्मद गोरी को १७ बार क्षमा किय क्योंकि वह वीर थे। किन्तु मुहम्मद गोरी एक बार भी उन्हें छोड़ न सका। वह वीर नहीं डरपोक था। समझता था कि पृथ्वीराज को पुनः पराजित करना असम्भव है।

महाराज सिकन्दर ने पुरु को छोड़ दिया, क्योंकि वह वीर था। इस प्रकार की अहिंसा उच्चतम वीरता है।

समस्त भारतीय इतिहास इस प्रकार के उदाहरणों से भरा पड़ है। यहाँ तक कि हमारी वर्तमान सरकार भी इसी का अनुशरण क रही है।

२१. अहिंसा से विरोधियों को मित्र बना सकते हैं

जब गाँधी जी सेठ अब्दुल्ला और सेठ तय्यब के मुकदमे के सिलसिले दक्षिणी अफ्रीका पहुँचे तो उन पर जो अत्याचार अंग्रेजों ने किया तका वर्णन उन्हीं के शब्दों में सुनें—

स्टीमर के कप्तान ने गाँधी जी से पूछा—गोरे जिस तरह की धमकी रहे हैं उसी तरह अगर वे आपको चोट पहुँचाये तो आप अपने अहिंसक द्धान्तों का पालन किस तरह करेंगे ?

गाँधी जी ने जवाब दिया—मुझे आशा है कि उन्हें माफ करने की ौर उन पर मुकदमा न चलाने की हिम्मत और बुद्धि ईश्वर मुझे देगा।

इस पर कप्तान हंसा। स्टीमर से उतरते ही, गाँधी जी ने स्वयं लखा है कि—"मुझ पर कंकड़ों और सड़े अंडों की झड़ी लग गई। किसी मेरी पगड़ी उड़ा दी और लातें शुरू हुई। मुझे गश आ गया। मैंने ास के घर की जाफरी थाम कर साँस ली। तमाचे पड़ने लगे। इतने पुलिस के बड़े अधिकारी की पत्नी उस रास्ते से गुजरी। उसने मेरे ऊपर अपना छाता लगा दिया। श्रीमती अलेक्जन्डर ने मेरी रक्षा की।"

वहाँ के शासक मि० चैम्बरलेन थे। उन्होंने तार भेजकर गाँधी जी

से अनुरोध किया कि हमला करने वालों पर मुकदमा चलाया जाय, किन्तु गाँधी जी ने पत्र लिखकर कहा—

"मुझे किसी पर मुकदमा नहीं चलाना है। मैं तो उन्हें दोषी भी नहीं मानता। जब उन्हें सच्ची हकीकत मालूम होगी तो वे पछतायेंगे।"

इसका परिणाम अच्छा हुआ। अहिंसा के कारण दक्षिणी अफ्रीका के सहस्रों अंग्रेज गाँधी जी के मित्र बन गये।

२२. अहिंसा से शत्रु का प्रेम प्राप्त हो सकता है

By disarming himself, Gandhi has disarmed the British forces.

—Lord Wavell

अहिंसा से प्रतिपक्षी भी प्रेम करने लगते हैं। अहिंसा के सामने बृटिश-साम्राज्य की शक्तिशाली सेना को भी घुटने टेकना पड़ा।

अहिंसा का ही प्रतीकात्मक कार्य नाग पंचमी का त्यौहार है। नाग जैसे हिंसक जन्तु को दूध पिलाने की परम्परा यह बताती है कि अहिंसा से शत्रु का प्रेम प्राप्त हो सकता है। बापू की अहिंसक शक्ति के जादू से बचने के लिये ही परम राजनीतिज्ञ चर्चिल उनसे मिलने से डरता था। गुरु नानक ने सज्जन नाम के भयंकर डाकू को अहिंसा के अमोघ अस्त्र से ही जीता था।

२३. कायरता का विरोधी अहिंसा है

"जहाँ सिर्फ कायरता और हिंसा के बीच किसी एक के चुनाव की बात हो वहाँ मैं हिंसा के पक्ष में राय दूँगा।"

—महात्मा गाँधी

गाँधी जी की अहिंसा वीरों की अहिंसा थी। भ्रम से दुष्ट प्रवृत्ति के लोग अहिंसा को कायरता समझते हैं, किन्तु सज्जन अहिंसा को ही वीरता समझते हैं। यदि किसी प्रकार के भय से आक्रांत होकर हम हिंसा से विरत होते हैं तो हम कायर कहे जायेंगे न कि अहिंसा जैसे पवित्र धर्म के धारणकर्त्ता।

२४. अहिंसा का साधन दया है

उमा जे राम चरण रत, विगत काम मद क्रोध।
निज प्रभु मय देखहिं जगत केहिसन करहिं विरोध॥

—"तुलसी"

दूसरों को कष्ट न पहुँचने पाये इसके लिये राष्ट्रपिता ने सभी कष्ट स्वयं झेले। वस्त्र त्याग दिया ताकि अन्य लोग वस्त्र पहनें। अन्न त्याग दिया ताकि कोई भूखा न रहे। स्वयं नीम की पत्ती और खली खाई।

गो-दुग्ध त्याग दिया ताकि बछड़ों की हत्या न हो। साबरमती आश्रम में नमक एवं पानी को संयम के साथ खर्च करने का आदेश दिया। यह निर्धनों की वस्तु है इसका दुरुपयोग न होना चाहिये। अन्त में उन्होंने उच्चतम बलिदान किया ताकि लोग जीना सीखें।

२५. अहिँसा से बलिदान होना सीखो

जो तोकू कांटा बुवै ताहि बुवै तू फूल।
तोकू फूल के फूल हैं वाको हैं त्रिशूल ॥ —सन्त कबीर

अहिंसा विनम्रता की पराकाष्ठा है। जब शत्रु आपको उत्तेजित करे, ललकारे, आघात पहुँचाये तभी आपके अहिंसा व्रत की परीक्षा है। यदि उसमें आप सफल हुये तो अवश्य ही विपक्षी आपका लोहा मानने लगेगा। बापू कहते थे कि यदि कोई तुम्हारे बायें गाल पर तमाचा मारे तो दाहिना भी उसकी ओर घुमा दो। आततायी का स्वयं हृदय परिवर्तन हो जायगा।

२६. बिना अहिँसा के सत्य की खोज असम्भव है

बसकि दुश्वार है हर काम का आसां होना।
आदमी को भी मयस्सर नहीं इन्सां होना ॥ —'मिर्ज़ा ग़ालिब'

सत्य ही ईश्वर है। सारा विश्व ईश्वर द्वारा निर्मित है। अतः ईश्वर की बनाई सृष्टि के साथ मिलकर रहना अहिंसा है, सत्य की उपासना है। दोनों शब्द एक दूसरे के पूरक हैं। जहाँ सत्य है वहा अहिंसा है, जहाँ अहिंसा है वहाँ सत्य है।

२७. अहिँसा सामाजिक बन्धन है

हिन्दू धर्म के अनुसार सारे मनुष्यों का जन्म मनु एवं शतरूपा से हुआ। इसीलिये उनकी सन्तान मनुष्य कहलाये। इस्लाम धर्म के अनुसार सारे आदमी आदम एवं हव्वा द्वारा पैदा हुये। इसीलिये उनकी औलाद आदमी कहलाये। ईसाई धर्म के अनुसार सारे मानव ऐडम एवं ईव द्वारा पैदा हुये। अतः उनकी सन्तान "मैन" कहलाई।

इस तरह सभी धर्म यह मानते हैं कि सभी मनुष्य एक ही माता-पिता से उत्पन्न हुये। इसलिये सब भाई हैं। अतः एक दूसरे से मिलकर रहना सामाजिक बन्धन है। अहिंसा व्रत उस एक माता-पिता के प्रति श्रद्धा है।

२८. अहिँसा करना महा व्रत है

जैन धर्म और बौद्ध धर्म भारत में जन्मे। ये दोनों धर्म अहिंसा पर आधारित हैं। इनका प्रभाव इतना अधिक था कि वह भारत की सीमाओं के बाहर आज भी देखा जा सकता है। अनेक देश आज महात्मा गौतम

बुद्ध एवं महावीर स्वामी की जन्म भूमि की मिट्टी सिर पर धारण करने के लिये लालायित हैं।

उसी सिद्धान्त को मानने वालों में गाँधी जी अगली कड़ी हैं। उनकी अहिंसा बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म की अहिंसा से भी बढ़कर है। वह केवल शारीरिक अहिंसा तक ही सीमित नहीं है। उनकी अहिंसा मानसिक अहिंसा है। किसी की हत्या करना तो दूर की बात है। गाँधी जी हिंसा की बात न सोचते थे न कहते थे।

२९. अहिँसा प्रचंड शस्त्र है

विश्व में दो बड़े महायुद्ध हुये। हिंसा चरम सीमा पर पहुँची। किन्तु उससे मानवता को शान्ति नहीं मिली। आज बड़े-बड़े अस्त्र-शस्त्र जैसे परमाणु बल, हाइड्रोजन बम, कोबाल्ट बम आदि का निर्माण हो चुका है। किन्तु उससे भी प्रबल शस्त्र की खोज जारी है। वह शस्त्र है निरस्त्रीकरण अथवा अहिंसा।

'छूटहि मलकि मलहि के धोये' ईर्ष्या की आग ईर्ष्या से नहीं बुझती क्रोध क्रोध से शान्त नहीं होता, शस्त्रों की होड़ शस्त्रों को वृद्धि देती है केवल अहिंसा ही ऐसा हथियार है जहाँ ईर्ष्या, क्रोध तथा शत्रुता के लिये कोई स्थान नहीं है।

३०. मेरी अहिंसा में असीम श्रद्धा है

अहिंसा परमो धर्मः

महामानव महात्मा गाँधी अहिंसा पर विश्वास करते थे और उस
र अमल करते थे। उनकी अहिंसा दूसरों की अहिंसा से भिन्न थी। वह
वल शारीरिक अहिंसा पर विश्वास न करते थे। उनकी अहिंसा मन,
ाणी एवं कर्म की अहिंसा थी। वह दूसरों के अहित की बात न सोचते
, न कहते थे और न करते थे। उनके प्रतिद्वन्दी गोरे थे। वह कहते थे
ंग्रेजों का हित इसी में है कि वह भारत छोड़कर चले जायँ। इसीलिये
ं उनसे भारत छोड़ने को कहता हूँ।

अस्पृश्यता

३१. अस्पृश्यता हमारे राष्ट्र का अभिशाप है

"जिस प्रकार एक रत्ती संखिया से लोटा भर दूध बिगड़ जाता है उसी प्रकार अस्पृश्यता से हिन्दू धर्म चौपट हो रहा है।" —गाँधी जी

विश्व में चार बड़े धर्म हैं। जनसंख्या के अनुसार ईसाई धर्म सब से बड़ा है। इसके लगभग ८० करोड़ अनुयायी विश्व में हैं। जीसस क्राइस्ट ने प्रार्थना के लिये इस प्रकार की प्रार्थना लिखी है—

Our Father who art in heaven.
Hallowed be Thy Name.
Thy kingdom Come.
Thy will be done on earth.
As it is in heaven.

प्रार्थना का आरंभ My father से नहीं किया गया। Our Father से स्पष्ट है कि सभी एक पिता की सन्तान हैं। अतः विश्व बन्धुत्व के सिद्धान्त का प्रतिपादन होता है।

इस्लाम धर्म के लगभग ५० करोड़ अनुयायी हैं जो छुआछूत नहीं मानते।

एक ही सफ़ में खड़े हो गए महमूदो अयाज़।
न कोई बन्दा रहा न कोई बन्दा नवाज़।।

३२. झूठ बोलने वाला तथा पाखंडी अस्पृश्य है

हिन्दू धर्म के लगभग ४५ करोड़ अनुयायी हैं। इनमें पता नहीं कब से छुआछूत का दोष उत्पन्न हो गया है। यद्यपि धार्मिक ग्रन्थ इसे नहीं मानते।

सकल विश्व यह मम उपजाया ।
सब पर मोरि बराबर दाया ।।

—रामचरित मानस

बौद्ध धर्म के लगभग १० करोड़ अनुयायी हैं। बौद्ध धर्म वाले मानव ही नहीं अन्य जीवों को भी अपने समान मानते हैं।

बापू ने अस्पृश्य की कितनी सुन्दर व्याख्या की है। अस्पृश्य जन्मना नहीं वरन् कर्मणा होता है।

33. मैं हरिजनों के लिए भीख माँगना अपना कर्तव्य समझता हूँ

हरिजन बहुत समय तक सवर्णों की उपेक्षा, अत्याचार एवं अन्याय के शिकार रहे हैं। सवर्णों ने उन्हें बहिष्कृत किया, तिरस्कृत किया। जब वे भोजन दें तब वे खावें, जब वे वस्त्र दें तब वे पहने अन्यथा भूखे रहें, नंगे रहें और काम करते रहें। उन्हें न पढ़ने की आज्ञा, न पूजा की आज्ञा। यहाँ तक कि उनकी छाया मात्र से सवर्ण अपवित्र हो जाते थे।

किन्तु गाँधी जी कहते थे कि वे पतित पावन की सन्तान हैं तो पतित कैसे हो सकते हैं? वे तो मानवता, एकता और समानता में विश्वास करते थे और भीख मांगकर हरिजनों की सहायता करते थे।

३४. जहाँ प्रेम है वहीं ईश्वर है

रामहि केवल प्रेम पियारा, जानि लेहु जो जाननि हारा

—रामचरित मानस

राम नाम सब कोउ कहै ठग ठाकुर औ चोर।
विना प्रेम रीझैं नहीं तुलसी नन्द किशोर ॥

—सन्त तुलसीदास

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुया पंडित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का पढ़ै तो पंडित होय ॥

—सन्त कबीर

मानुष पेम भयउ बैकुण्ठी,
नाहि त काह छार एक मूंठी।
पेम पन्थ सों पहुँचै पारा,
बहुरि न आय मिलै यहि छारा ॥

—मलिक मुहम्मद जायसी

३५. ईश्वरीय नियमों का पालन ही विजय है

अहिंसा सत्यमस्तेय ब्रह्म चर्यापरिग्रहा। संयम।
तपः शौच सन्तोष स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधानानि। नियम।

विज्ञान की कक्षा में विज्ञान के नियम जानना अति आवश्यक है। गणित की कक्षा में गणित के नियमों के पालन से ही सफलता मिलती है। भारत में रहने वालों को भारतीय संविधान के नियमों का पालन अपेक्षित है अन्यथा कारावास अथवा मृत्युदन्ड मिल सकता है। उसी प्रकार ईश्वर के राज्य (Kingdom of heaven) में रहकर ईश्वरीय नियमों का पालन ही विजय है।

३६. उपकार कभी व्यर्थ नहीं जाता

परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥

—रामचरित मानस

यही पशु प्रवृत्ति है कि आप ही सदा चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ।

—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

परोपकाराय सतां विभूतयः

सज्जन पुरुषों की विभूति ही परोपकार है। जो अपने लिये जीवित है उसका जीवन शव की भाँति है। सभी धर्मों में उपकार का परम महत्व है। गुरु नानक के भी तीन सार सिद्धान्त थे।

१–ईश्वर का भजन करो

तीसरे सिद्धान्त में उपकार की ही भावना निहित है।

३७. भगवान सबको शरण देता है

भगवान के चित्र में हथेली सदैव झुकी रहती है जिसका अर्थ है "जो भी मेरी शरण में आयेगा उसकी मैं रक्षा करूँगा।

गीता में भगवान कृष्ण ने स्वयं कहा है—

सर्व धर्मान् परित्यज्य माम एकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षियस्यामि मा शुचः ॥

ईसा का भी यही उपदेश है, "जा तेरे पास जो धन है कंगालों को बाँट दे, फिर मेरी शरण में आ। मैं तुझे स्वर्ग का अधिकारी बनाऊँगा।"

३८. विद्यार्थी भविष्य की आशा है

'Child is the father of man.'

—William wordsworth.

आज का विद्यार्थी कल का नागरिक है। इन्हीं में देश के भावी कर्णधार हैं। अतः विद्यार्थी ही भविष्य की आशा हैं। आवश्यकता इस बात की है कि विद्यार्थी सचमुच विद्या का अर्थी हो। विद्या ही उसका तन

मन धन हो। आज देश में जो विषाक्त वातावरण विद्यार्थी समाज में व्याप्त है, उसे यदि न रोका गया तो विद्यार्थी लक्ष्य भ्रष्ट हो जायगा तथा देश रसातल में चला जायगा।

३९. विद्यार्थी अपने अन्दर सेवा भाव विकसित करें

बहुत प्रसिद्ध कहावत है—सेवा करे सो मेवा पावे। आज आप जो अर्जित करेंगे कल आप को वही मिलेगा। सेवा करेंगे तो भविष्य में आप की सेवा करने वाले भी हो जायेंगे। आप जिसकी सेवा करेंगे उसका सारा वैभव आप समय पर उपयोग कर सकेंगे।

उदाहरण—

हनूमान जपि पावन नामू, अपने वश करि राखा रामू।

सेवा का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है, किन्तु गुरुजनो की सेवा का स्थान सर्वोपरि है। यही उनके प्रति की गयी श्रद्धा का प्रगट रूप है। इसके अतिरिक्त असहायों की, दीन-दुखियों की तथा दरिद्र-कंगालों की सेवा है जो ईश्वर की सेवा के तुल्य मानी गयी है।

४०. अपना विश्वास कभी न खोओ

ईश्वर निर्मित मानव शरीर में असीम शक्तियाँ निहित हैं। केवल उनके विकास की आवश्यकता है। अतः हमारा सिद्धान्त होना चाहिये—

"न दैन्यं न च पलायनम्"

यदि हम दीनता रहित निर्भय होकर अपने सिद्धान्त पर अडिग रहेंगे तो सबके विश्वास-पात्र बन जाँयगे। विश्वास खो देने पर तो जीवन जीवन न रहेगा और हम कहीं के न रहेंगे। हमारी वही दशा होगी जो 'भेड़िया आया' 'भेड़िया आया' कहने वाले बालक की हुयी थी।

४१. विश्वास से पहाड़ हिल सकते हैं

विश्वासं फल दायकं

यदि आप दृढ़ विश्वास से कार्य करेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी अतः अपने आप पर आत्म विश्वास रक्खो। दूसरों के प्रति विश्वास रखने से भी आप एक दूसरे के विश्वास-पात्र बन सकते हैं।

Trust begets trust.

अर्थात्—

विश्वास से विश्वास उत्पन्न होता है।

अडिग विश्वास ने प्रहलाद को भगवान के दर्शन पाषाण स्तंभ में दिये, मीरा का विष-पान उन्हें अमरत्व प्रदान कर गया। बापू का अडिग विश्वास ही था जो स्वराज्य ले आया।

४२. व्यायाम शारीरिक स्वास्थ्य की कुंजी है

दवा कोई वर्जिश से बेहतर नहीं ।
यह नुस्खा है कम खर्च बालानशीं ।।

व्यायाम की महत्ता भाषण से नहीं स्वयं अनुभव से ज्ञात होती है । व्यायाम करके देखें आप विश्व विजयी बन सकते हैं । आपके सामने राम मूर्ति, गामा, जिविस्को आदि के उदाहरण वर्तमान हैं । अभी हाल में अध्यापक का कार्य करने वाले, सादा जीवन बिताने वाले तथा मांस मदिरा आदि के सेवन से विरत रहकर मास्टर चँदकीराम ने भारत-केसरी की उपाधि प्राप्त की । यह है व्यायाम की महिमा जो शरीर को स्वस्थ करता है तथा स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है— Healthy mind in healthy body.

४३. शिक्षा मात्र आत्मोन्नति के लिए होती है

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्क्ते,
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम् ।

लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिम,
किं किं न साधयति कल्प लतेव विद्या ।।

जिस प्रकार शरीर के पालन-पोषण के लिए भोजन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार आत्मा का पालन-पोषण शिक्षा और ज्ञान से होता है और यह शिक्षा का क्रम भी निरन्तर चलता रहता है । मनुष्य जीवन भर सीखता है और उसी के प्रकाश में आत्मोन्नति के साधन जुटाता रहता है ।

४४. शिक्षा एक तप योग है

तप बल से जग सृजैं विधाता, तप बल विष्णु सकल जग त्राता ।
तप बल शंभु करैं संहारा, तप बल शेष धरै महि भारा ।
—गोस्वामी तुलसीदास

तप का इतना व्यापक प्रभाव होता है । तप अनेक प्रकार के होते हैं । विद्यार्थी के लिये शिक्षा पाना ही तप है । विद्यार्थी यदि केवल १६ वर्ष तक शिक्षा पाने का तप करें तो उनमें असीम शक्ति का संचार हो जायेगा । इतनी तपस्या से उन्हें सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हो जायगा ।

विद्यार्थी के जो पाँच लक्षण निर्धारित हैं-वह तप का ही एक रूप है-

काक चेष्टा, बकुल ध्यानं, श्वान निद्रा तथैव च ।
स्वल्पहारी, ब्रह्मचर्यं विद्यार्थी पंच लक्षणम् ।

शिक्षा-प्राप्ति सहज ही नहीं होती, उसमें योग की साधना अपेक्षित होती है ।

४५. श्रद्धा के बिना ज्ञान सूना लगता है

मानव मन की दो वृत्तियाँ होती हैं—

१—विचारात्मक वृत्ति

२—रागात्मक वृत्ति

विचारात्मक प्रवृत्ति के कारण ज्ञान उत्पन्न होता है और रागात्मक प्रवृत्ति के कारण श्रद्धा उत्पन्न होती है। श्रद्धा को विश्वास, प्रेम, सहानुभूति, दया आदि उदात्त भावों का प्रतीक माना गया है। ज्ञान तर्कमयी प्रवृत्तियों का पोषक होता है। अतः यह मानव को तर्क वितर्क में उलझा कर आनंदपथ से दूर रखने में लीन रहता है। तार्किकता, उदासीनता, निर्ममता आदि भाव ज्ञान की परिधि में आते हैं। अतः बुद्धिहीन अन्ध-भावना और श्रद्धाहीन पंगु चेतना संसार में सफलता नहीं पा सकतीं। श्रद्धाहीन ज्ञान सन्ताप और संघर्ष को ही जन्म देता है। यही बात गाँधी जी के शब्दों में "श्रद्धा के बिना ज्ञान सूना लगता है।"

४६. सत्याग्रह कभी व्यर्थ नहीं जाता

महात्मा गाँधी अहिंसा को साधना और साध्य दोनों माना करते थे। मन, वचन और कर्म की व्यक्तिगत अहिंसा और मैत्री धर्म के द्वारा समूची

मनुष्य जाति को इस महान सत्य के प्रति उन्मुख और इसे उपलब्ध करने के लिये प्रयत्नशील बनाना ही उनका सत्याग्रह था। सत्य, प्रेम, मैत्री उनके साधन थे। जिसे अपने कर्तव्यों एवं आदर्शों में विश्वास न हो वह सत्याग्रही नहीं हो सकता।

जिसका साधन पवित्र होता है, जो मन से, वचन से, कर्म से पर कल्याण चाहता है उसका प्रयास विफल नहीं हो सकता। जिस महा-मानव का मनुष्य का कल्याण ही लक्ष्य है, मनुष्य के प्रति अखंड प्रेम ही मार्ग है और मनुष्य की महिमा में अखंड विश्वास ही संबल है, वह हार नहीं सकता। हार उसकी होती है जो प्रतिस्पर्द्धा वश, घृणावश या लोभवश संघर्ष करता है। महात्मा जी का मार्ग प्रेम का मार्ग है, मैत्री का धर्म है। उसमें कभी हार नहीं होती। उसका प्रयास व्यर्थ नहीं जाता।

४७. सत्याग्रही की कभी हार नहीं होती

विश्ववंद्य महात्मा गांधी प्रायः यही कहा करते थे कि सत्याग्रही की कभी हार नहीं होती। सत्याग्रही केवल जीतता ही है। यह उनका विश्वास ही नहीं था उनके समूचे तत्व ज्ञान का मेरुदण्ड था। वे भारत-वर्ष की विशाल सन्त परम्परा के नर रत्न थे। उनकी आध्यात्मिक

साधना वैयक्तिक साधना न थी। वे अकेले अपने आप की मुक्ति के लिये व्याकुल न थे, समूचे देश को और समूची मनुष्य जाति को अपने साथ ले चलना चाहते थे। प्राचीनकाल से ही लोग पुत्रात् शिष्यात् पराजयम् की कामना करते आये हैं। उसमें प्रतिपक्षी के प्रति प्रीति और उसे बड़ा बनाने की भावना रहती है। इस संघर्ष की हार हार नहीं होती, क्योंकि उसमें आरम्भ से अन्त तक प्रेम ही प्रेम होता है।

प्रेम की लड़ाई में हार और जीत केवल शब्द मात्र हैं, जो वस्तुतः एकार्थक है या निरर्थक हैं। सत्याग्रही की लड़ाई प्रेम की लड़ाई होती है। जो प्रतिपक्षी को और भी उन्नत और कल्याणकारी बनाना चाहता है उसके हारने का प्रश्न ही नहीं उठता।

४८. सफाई सबसे महत्वपूर्ण है

सफ़ाई अजब चीज़ दुनियाँ में है,
सफाई से बढ़कर न कोई है शै।

स्वच्छ भवन, स्वच्छ वस्त्र, स्वच्छ नगर कितने सुन्दर लगते हैं। तन की निर्मलता से स्वास्थ्य ठीक रहता है। आन्तरिक शुचिता से मन स्वस्थ रहता है। स्वच्छता मन के लिये आकर्षक, आत्मा के लिये स्पृहणीय और तन के लिये सुखकर है। जो शरीर, घर, गाँव, नगर, गलियाँ स्वच्छता से अछूती हैं उन्हें नेत्र स्पर्श नहीं करना चाहते और जो वस्तु नयनाभिराम नहीं है वह किसी प्रकार ग्राह्य नहीं है।

४९. शुद्ध हवा में साँस लो

शुद्ध हवा में आक्सीजन की मात्रा अधिक रहती है। रक्त के लाल करण उसे शोषित करके अंग प्रत्यंग में पहुँचाते हैं। इससे शरीर निर्मल हो जाता है, चेहरे पर गुलाबीपन आ जाता है और चित्त प्रसन्न हो जाता है, मुख मंडल कान्तियुक्त हो जाता है। चेहरे की झुर्रियाँ मिट जाती हैं। अतः सोते समय, खिड़की खुली रहने दो और शुद्ध हवा में साँस लो।

५०. दुखी प्राणी की सेवा ही भगवद् भक्ति है

जो प्रभु दीनदयाल कहावा, आरति हरन वेद यश गावा,
दीन दयाल विरुद संभारी, हरहु नाथ मम संकट भारी। —तुलसी

'दीन दयाल' 'दीन बन्धु' ईश्वर के पर्यायवाची हैं। भगवान दीन दुखियों के भाई हैं। जो दीन दुखियों की सेवा करे वही भक्त है अथवा स्वयं दीन बन्धु है।

दरिद्र सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है। दीन दयालु ही आस्तिक है, ज्ञानी है, भक्त है, प्रेमी है। दीन दुखियों के दर्द का मर्मी ही महात्मा है।

कबिरा सोई पीर है जो जानै पर पीर।
जो पर पीर न जानई, सो काफिर बे पीर॥

—सन्त कबीर

५१. सत्य जीवन का स्वर्णिम सूत्र है

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह,
शरीर श्रम, अस्वाद, सर्वत्र भयवर्जन,
सर्व धर्म समानत्व, स्वदेशी, स्पर्श भावना,
विनम्र व्रतनिष्ठा से ये एकादश सेव्य हैं।

गांधी जी प्रत्येक कांग्रेसी से उपर्युक्त ११ नियमों के पालन का वचन लिया करते थे। प्रत्येक दिन शाम को प्रार्थना सभा में ये ११ बातें दोह-राई जाती थीं। इस प्रकार बापू के ये सिद्धान्त रत्न की भाँति हैं जिनको एक में पिरोने का काम सत्य का ही स्वर्णिम सूत्र करता है, क्योंकि सत्य उनके जीवन का आधार भूत मूल मन्त्र था।

५२. चरखे की पुकार दूसरी सब पुकारों से मधुर है

चरखे की पुकार प्रेम की पुकार है और प्रेम ही स्वराज्य है। खादी के प्रत्येक धागे में स्वदेश प्रेम भरा हुआ है। उसमें माँ बहनों का प्यार छिपा है। इसने राजनैतिक स्वतन्त्रता दिलाई है और अब आर्थिक स्व-तन्त्रता दिलाने की ओर उन्मुख है। चरखा भारत से बेरोजगारी और निर्धनता दूर करने का साधन है। भारत को वस्त्रों के मामले में आत्म निर्भर बनाने का यन्त्र है; औद्योगीकरण का मेरुदंड है।

९३. स्वावलम्बन सफलता की पहली सीढ़ी है

स्वावलम्बन का अर्थ है जीवन की मुख्य आवश्यकताओं जैसे भोजन और वस्त्र के बारे में हम आत्म निर्भर बनें। अपनी जरूरत का सामान अनाज और कपड़ों के लिये रुई खुद पैदा करें। छोटे-मोटे औजारों का भी खुद प्रबन्ध करें। दूसरों पर निर्भर रहकर हम उन्नति नहीं कर सकते। थोड़े शब्दों में स्वावलम्बन का अर्थ हैं परमुखापेक्षी न होना। हर बात में दूसरे का मुँह ताकना अकर्मण्यता है। जहाँ तक हो अपना काम स्वयं करो और कर्मशील जीवन व्यतीत करो। निश्चय ही स्वावलम्बी व्यक्ति एक दिन सफलता के शिखर पर आरूढ़ होता है।

९४. प्रार्थना में असीम शक्ति है

कलियुग सम युग आन नहि, जो कर मन विस्वास।
गाइ राम गुन गन विमल, भव तरु बिनहि प्रयास॥ —तुलसी

सतयुग में हरि का ध्यान करके योगी विज्ञानी ईश्वर को प्राप्त करते हैं। त्रेता युग में यज्ञों द्वारा मुक्ति होती है। द्वापर में भगवान की पूजा से मोक्ष मिलता है, किन्तु आजकल केवल प्रार्थना मात्र से मनुष्य श्री वैकुण्ठधाम को जाता है। बापू प्रार्थना में अचल विश्वास करते थे।

उनकी प्रर्थना का समय नियत था और नित्य-प्रार्थना उनके जीवन का अंग थी। इंगलैण्ड में एक बार उन्होंने कार में बैठे ही बैठे प्रार्थना की क्योंकि वे प्रार्थना की अमोघ शक्ति से अभिज्ञ थे और समय के नितान्त पाबन्द थे।

६६. प्रार्थना के बिना भीतरी शक्ति नहीं मिलती है

सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना, सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना।
राम भजन बिनु सुनहु खगेसू, मिटै न जीवन केर कलेशू॥

—रामचरित मानस

परमपिता परमेश्वर सर्वशक्तिमान हैं उन्हें स्मरण करने से असीम शक्तियाँ आप में आ जायेंगी, अन्दर परम प्रकाश हो जायगा और अन्धकार मिट जायगा। प्रार्थना से सभी जीवन के क्लेश मिट जायेंगे और आन्तरिक शक्ति प्राप्त होगी। सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना मानव को भी द्रवीभूत कर देती है फिर ईश्वर तो सर्वज्ञ है वह तो सच्ची प्रार्थना का ही भूखा है। अतएव प्रार्थना ईश्वरीय अनुभूति का प्रवलतम साधन है और वह अनुभूति मानव के अन्तर के विकास का महानतम स्रोत है।

५६. प्रार्थना मनुष्य का सबसे बड़ा सहारा है

विस्मिल्लाहेर्र रहिमानिर्रहीम

—कुरान सरीफ

अल्लाह सबसे बड़ा है और मैं उसका नाम लेकर शुरू करता हूँ जो रहम करने वालों पर भी रहम करने वाला है।

लिहाज़ा जो इबादत करता है अल्लाह पाक उसकी मदद करता है उससे बड़ा मददगाह खल्क में कहीं हो ही नहीं सकता इसलिए उसकी इबादत ही इन्सान का सबसे बड़ा सहारा है।

५७. अहिंसा जिन्दगी का एक रास्ता है

सामान्यत: इस्लाम धर्म के बारे में यह भ्रमपूर्ण धारणा फैली हुई है कि इस्लाम धर्म हिंसा और बल प्रयोग में ही विश्वास करता है। लेकिन बात ऐसी नहीं है। मुहम्मद साहब का उपदेश प्रधानत: दया, शान्ति और प्रेम का उपदेश है। केवल मनुष्यों के ही प्रति नहीं वरन् सब जीव-धारियों के प्रति कुरानशरीफ अहिसा को हिंसा पर तरजीह देता है।

इस्लाम शब्द का अर्थ ही है 'शान्ति,' 'सुरक्षा' और 'मुक्ति'। 'मुसलमान' शब्द का अर्थ है पूरे ईमान वाला अथवा चरित्रवान व्यक्ति। मुसलमानों के सामान्य अभिवादन "अस्सलामालेकुम" का अर्थ है 'आप को शान्ति प्राप्त हो'।

५८. बुद्धि के बिना बल नहीं

जन्तु-जगत में हम एक से एक बढ़कर शक्तिशाली जन्तु पाते हैं। आकाश में ऐसी चिड़िया हैं जो हाथी को कान पकड़ कर आकाश में उड़ा ले जाती हैं। धरती पर हाथी तो भीम काय है ही गेंडा एवं शेर भी कुछ कम नहीं। सागर में ह्वेल मछली के सामने हाथी उसका एक बच्चा मालूम देता है।

किन्तु मनुष्य एक छोटा सा प्राणी बुद्धि के सहारे इन सबको अपने वश में रखता है। जरा सा दिमाग में दोष आने से सब व्यर्थ हो जाता है। अतः बुद्धि के बिना सब बल व्यर्थ हैं।

५९. बुद्धि बल बहुत बड़ा बल है

सुबुधि सों ससा सिंघ कहँ मारा, कुबुधि सिंघ कूवाँ परि हारा।

—मलिक मुहम्मद जायसी

सिंह एवं खरगोश की बड़ी प्रसिद्ध हिकायत है। इस लघु कथा में चालाकी से खरगोश ने सिंह से कहा कि कुयें में शेर बैठा है। दुर्बुद्धि शेर

ने अपना प्रतिबिम्ब देख कर शेर समझ लिया और उसे मारने के लिये कुयें में कूद पड़ा।

विश्व में बुद्धि का ही चमत्कार है। बुद्धि के कारण ही राजनीतिज्ञ सारे देश को अपने अधिकार में रखते हैं और वैज्ञानिक अलौकिक वस्तुओं का आविष्कार करते हैं।

६०. माता-पिता की सेवा करना पुत्र का प्रथम कर्त्तव्य है

प्रात काल उठि कै रघुनाथा, मातु पिता गुरु नावहिं माथा।

—रामचरित मानस

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम प्रातः काल माता-पिता एवं गुरु के चरणों में मस्तक रखते थे। श्रवण कुमार की पितृभक्ति का नाटक देख कर ही महात्मा गांधी बहुत प्रभावित हुये और जीवन पर्यन्त उनकी आज्ञाओं का पालन करते रहे। जनक जननी की सेवा संसार का सर्वोत्तम फल है। जिसे यह फल चखने को नहीं मिला उसका इहलोक तथा परलोक दोनों का सुख समाप्त हो गया।

६१. माता के समान पूजनीय कोई दूसरा नहीं है

"जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।"

जौ बन जान कहेउ एक ताता, तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता ।

—रामचरित मानस

रामचरित मानस में माँ का स्थान पिता से अधिक माना गया है । माता कौशल्या ने भगवान राम से कहा, "यदि केवल पिता ने तुम्हें बन-वास दिया है तो तुम मेरी आज्ञा से बन जाना स्थगित कर सकते हो ।"

माता का प्रेम निष्कपट एवं निस्वार्थ होता है । मनुष्य मात्र में ही नहीं पशु पक्षी में भी मातृ प्रेम अद्वितीय होता है ।

६२. क्रोध आये तो चुप हो जाओ

लोभ के इच्छा दंभ बल, काम के केवल नारि ।

क्रोध के परुष बचन बल, कहैं यह सन्त विचारि ।। —तुलसी

क्रोध से युक्त मनुष्य केवल अपशब्द ही बकता है । वही अपशब्द उत्प्रेरक का कार्य करते हैं । अतः क्रोध आने पर यदि आप चुप हो जायँ तो क्रोध का बल ही नष्ट हो जायगा और क्रोध शान्त हो जायगा । क्रोध का एक विशेष लक्षण है कि वह सदा दुर्बल को ही अपना शिकार बनाता है, बलवान से डरता है । अतएव अपने में शक्ति तथा सामर्थ्य अर्जित करो, क्रोध अपने आप भागता फिरेगा ।

६३. लड़ाई विनाश की जड़ है

तुमने विश्व के दो महायुद्धों का वर्णन पढ़ा होगा । इनमें करोड़ों

मनुष्य मारे गये । अरबों की सम्पत्ति नष्ट हुई । लाखा मनुष्य विकलांग हो गये । लाखों बेघरबार के हो गए । द्वितीय विश्वयुद्ध में तो हिरोशिमा नाम का शहर पूरा राख बनकर आकाश में उड़ गया । उतनी धरती ही ऊसर बन गई । सैकड़ों मील तक के लोग अन्धे लंगड़े अथवा विचित्र रोगों से आज तक पीड़ित हैं जब कि परमाणुबम २५ वर्ष पूर्व छोड़ा गया था । लड़ाई से बचना चाहिये यह विनाश की जड़ है । यद्यपि द्वितीय युद्ध में अंग्रेज जीते थे किन्तु वह भारत का शासन न चला सकें और उस युद्ध की क्षति पूर्ति शायद कभी न कर सकेंगे ।

६४. क्रोध पाप का मूल है

लखन कहेउ हंसि सुनहु मुनि क्रोध पाप कर मूल ।
जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं विस्व प्रतिकूल ।

—तुलसी

क्रोध से ही दुर्वचन निकलते हैं । क्रोध के वशीभूत होकर मनुष्य हिंसा करता है । अतः क्रोध से बचो ।

क्रोध आने पर मनुष्य के संयम का बाँध टूट जाता है । वह विवेक खो देता है । विवेक नष्ट होने पर उचितानुचित ज्ञान नष्ट हो जाता है और मनुष्य अनेक अकरणीय कार्य करता है जो पाप के पंक में उसे फंसा देते हैं ।

६५. पाप से घृणा करो, पापी से नहीं

बाइबिल में एक नीति कथा है। एक बार ईसा मसीह जैतून पहाड़ पर गये। वहाँ भीड़ बाँध कर लोग उनके पास आये। वे उन्हें उपदेश देने लगे। इसी बीच में कुछ शास्त्री और फरीसि लोग उनके पास एक स्त्री को पकड़ लाये जो पाप करती हुई पाई गई थी। उन्होंने यीशु से कहा :—

"गुरुजी, इस व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थर हन कर मार डालें। पर आप क्या कहते हैं ?"

यीशु ने सिर उठा कर उनसे कहा—

"तुम में से जो मनुष्य पापरहित हो वही पहला पत्थर उसपर हने।"

तब बड़े से लेकर छोटे तक एक ब एक वहाँ से बिदा होते गये कि सभी निकल गये। किसी ने उस स्त्री को दण्डित नहीं किया। यीशु स्त्री से बोला, "जाओ, और अब फिर पाप न करो।"

इस नीति कथा से स्पष्ट है कि पाप एक क्षणिक मैल है जो पश्चा-ताप करके हटायी जा सकती है। मन मोती है। मैल के कारण मोती त्यागना व्यर्थ है। अतः पाप से घृणा करो, पापी से नहीं।

६६. क्रोध हीन मनुष्य देवता है

काम क्रोध मद लोभ सब, तात नरक कर पन्थ,
सब परिहरि रघुबीरहि, भजहु भजहि जेहि सन्त । — तुलसी

जो मनुष्य कभी क्रोध नहीं करता, वह अप्रिय बचन नहीं बोलता ; वह किसी को आघात नहीं पहुँचाता । अतः सब उससे प्रेम करने लगते हैं । वह सबका प्रिय हो जाता है ; सबकी श्रद्धा का पात्र हो जाता है और देव-तुल्य हो जाता है ।

मनुष्य के पाँच महारिपुओं में क्रोध एक है । जिसने इस शत्रु को जीत लिया वह देवोपम गुणों से अलंकृत हो जाता है ।

६७. सदाचरण लंगड़े की लाठी है

जिस समय मनुष्य पर विपत्तियाँ आती हैं सभी उसका साथ छोड़ देते हैं :—

बागबां ने आग दी जब आशियाने को मेरे,
जिन पे तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे ।

किन्तु धैर्य, धर्म आदि सद्गुण ऐसी अवस्था में बल प्रदान करते हैं । वही गुण उसे पुनः शक्ति संचित करके आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं । अतः सदाचरण लंगडे की लाठी है ।

६८. सदाचरण ही चरित्र की सीढ़ी है

विनय, उदारता, लालच में न पड़ना, धैर्य, सत्य भाषण, बचन का
लन करना, कर्तव्य परायणता आदि गुणों का पालन करना ही सदा-
रण है। बचपन से ही यदि इन गुणों पर चलने का अभ्यास किया
ाय तो मनुष्य इन सीढ़ियों द्वारा चरित्र की उच्चतम सीमा तक पहुँच
कता है।

सदाचार सुख मूल है, दुराचार दुख मूल।
सदाचार शुभ फूल है, दुराचार कटु शूल॥

सदाचार में देवता बसते हैं। आत्मा सुखी व तृप्त रहती है। मनुष्य
ा मस्तक गर्वोन्नत रहता है।

सामान्य

६९. बिना ज्ञान के सही स्वतन्त्रता नहीं मिलती

राजनीति का ज्ञान रखने वाले महापुरुषों ने भारत को स्वतन्त्र
-राया। साहित्य का ज्ञान रखने वाले विद्वान एवं मनीषी बुद्धि को

अनेक कुतर्कों से स्वतन्त्र करवा देते हैं और तत्व ज्ञानी अथवा आध्यात्मिक ज्ञान रखने वाले ऋषि मुनि आत्मा को मुक्ति दिलवा देते हैं। बिना ज्ञान के सही स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती, क्योंकि राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त होने पर भी यदि हम अज्ञान के कुएँ से बाहर न निकल पाये तो उस स्वतन्त्रता का न उपभोग ही होगा न वह स्थायी ही रहेगी।

७०. शरीर जगत का छोटा सा नमूना है

पञ्च तत्व यह रचित शरीरा, छिति, जल, पावक, गगन, समीरा।

यदि शरीर को स्थूल जगत का नमूना मानें तो जगत के सारे पदार्थ शरीर में मिल जायेंगे। हड्डियों को पर्वत, बालों को बन, शिराओं एवं धमनियों को नदियाँ, मूत्राशय को खारा सागर, मांस को उर्वरा धरती, उदर को खानें, हृदय को मानसरोवर, मस्तिष्क को कैलाश पर्वत, आँखों को शशि-सूर्य, आत्मा को परमात्मा का छोटा रूप मान सकते हैं।

यदि शरीर को सूक्ष्म जगत का नमूना मानें तो मनुष्य में आदतों का वशीभूत होना जड़ता है, संवेदना, परोपकार, दया चेतनता है। सत्य, अहिंसा, त्याग, ब्रह्मचर्य, असंग्रह आदि गुण हैं, काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्षा आदि दोष हैं। ये सभी बातें सारे जगत में पाई जाती हैं और

छोटे रूप में यही प्रवृत्तियाँ हर मानव शरीर में हैं। शरीर इस जगत की इकाई है।

जड़ चेतन गुण दोष मय विश्व कीन्ह करतार।
सन्त हंस गुण पय गहहिं परिहरि वारि विकार॥

—तुलसी

७१. समाजवाद तो हमारे देश की प्राचीन देन है

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चित दुख भाग्भवेत॥

सब लोग सुखी हों, कोई गरीब न हो, सभी को आरोग्य, बल, बुद्धि, विद्या, सम्पत्ति आदि सुख के साधन प्राप्त हों, सर्वत्र समानता का व्यवहार हो, आदि शुभेच्छाएँ पुराने जमाने से प्रार्थना, नाटक आदि के अन्त में सदैव से प्रकट की जाती रही हैं। समाजवाद के इस ध्येय से किसी विवेकी मनुष्य का कभी विरोध नहीं रहा है।

आज भी किसी समझदार पुरुष को समाज की ऐसी हालत में सन्तोष नहीं हो सकता जिसमें कुछ व्यक्तियों के पास तो अपार सम्पत्ति, अधिकार, उच्च पद और अवकाश हों और अधिकांश लोगों को अत्यन्त परिश्रम करते हुये भी तंगी, अधीनता, भय और जी हुजूरी में ही

जीवन काटना पड़ता हो। इसीलिये इन्दिरा सरकार समाजवादी समाज की स्थापना के लिये प्रयत्नशील हैं। बैंकों का राष्ट्रीयकरण इस दिशा में पहला कदम है।

७२. स्वावलम्बन द्वारा सम्पादित कार्य से सुख उपजता है

जो लोग किचेन गार्डन बनाते हैं वह ही समझ सकते हैं कि अपने हाथ से लगाये गए सब्जी के पौधे जब फल देने लगते हैं तो कितना सुख उपजता है। बाजार से क्रय किये गए टमाटर के स्वाद से इनका स्वाद कहीं अधिक होता है। इसी प्रकार जो भी कार्य हम स्वयं करके उसके फल का आस्वादन करते हैं, उसमें अधिक मिठास व सन्तुष्टि मिलती है। अपने हाथ का बनाया भोजन, अपने परिश्रम से काता व बुना कपड़ा तथा अपनी मेहनत के कण से उगाया हुआ अन्न अनुपम सुख प्रदान करते हैं। विद्यार्थी के लिये तो स्वावलम्बन पहला धर्म है।

७३. स्त्री पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं

नारी निन्दा मत करो नारी नर की खान।
नारी से नर होत हैं ध्रुव प्रह्लाद समान।।

भारत के संविधान में जाति, धर्म और यौनि में कोई अन्तर नहीं माना गया। सभी को समान अधिकार प्राप्त हैं। यह भारत की प्राचीन परम्परा है। दान, यज्ञ, तीर्थ यात्रा इत्यादि बड़े कार्यों में नारी समान रूप से भाग लेती हैं। युद्ध-क्षेत्र में झाँसी की रानी विश्व विख्यात हैं। नारी सदैव पुरुष की अर्द्धांगिनी रही है। यहाँ तक कि हमारे देवता शिव जी एवं पार्वती जी की संयुक्त मूर्ति की पूजा होती है।

७४. स्वाध्याय ज्ञान संपादन की कुंजी है

जिस प्रकार व्यायाम शरीर के लिये आवश्यक है उसी प्रकार स्वाध्याय बुद्धि के लिये व्यायाम है। जितनी भी पुस्तकें आप को उपलब्ध हो सकें उन्हें पढ़ डालो। हो सकता है भविष्य में आपको इन्हें पढ़ने का अवसर ही न मिल पाये। यद्यपि ज्ञान एक सागर है और जीवन भर में हम उसकी केवल एक बूंद का ही पान कर सकते हैं, किन्तु उसी एक बूंद का पान ही अमृतोपम है। उस अभागे को क्या कहें जो उस एक बूंद से भी वंचित रहता है। पर उसका रसास्वादन केवल स्वाध्याय से ही मिलता है जो हमें ज्ञान की ओर उन्मुख करता है।

७५. स्वाध्याय शिक्षकों की सर्व श्रेष्ठ आदत है

स्वाध्याय का अर्थ है वेदशास्त्रों का अध्ययन और परमेश्वर के नाम जपने का अभ्यास । इससे शिक्षकों को अपने अतीत का ज्ञान हो सकता है और मन निर्मल हो सकता है । अध्ययन करते रहने से ज्ञान बढ़ता है । अतः शिक्षकों को स्वाध्यायी बनना चाहिये और अपने को अतीत के योग्य बनाना चाहिये और सदैव की भाँति 'जगत गुरु' बने रहने के योग्य बनना चाहिये । जो स्वयं नहीं पढ़ेगा, वह दूसरों को क्या पढ़ायेगा ? जो स्वयं ज्ञानी न होगा वह दूसरों को ज्ञान क्या देगा ? कबीर ने लिखा है :—

जाका गुरु भी अंधला, चेला खरा निरन्ध ।
अंधै अंधा ठेलिया, दून्यू कूप पड़न्त ।।

७६. संगठन आधुनिक युग का कारगर हथियार है

जनतन्त्र में संगठन ही शक्ति है । एक लाख मनुष्यों को संगठित करने वाला व्यक्ति विधान सभा का सदस्य और ५ लाख व्यक्तियों को संगठित करने वाला व्यक्ति लोक सभा का सदस्य हो जाता है । सूबे

का संगठन करने वाला व्यक्ति मुख्य मन्त्री और देश भर को संगठित करने वाला व्यक्ति प्रधान मन्त्री बन जाता है। इसी से गाँधी जी संगठन को आधुनिक युग का कारगर हथियार मानते थे। प्रत्येक क्रान्ति के लिये संगठन की आवश्यकता पड़ती है। इसीलिये कहा गया है—'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता'।

संगठन करके हम महान उद्देश्यों की पूर्ति कर सकते हैं।

७७. संयम शील का जीवन सदा सुखी रहता है

सत्य, अहिंसा, त्याग, दूसरे की वस्तु न लेना और ब्रह्मचर्य ब्रत का पालन संयम हैं। इनका पालन करने से शरीर स्वस्थ रहता है। मन प्रसन्न रहता है और आत्मा निर्मल हो जाती है। इस प्रकार जीवन सुखी हो जाता है। संयमी की महिमा का गुणगान करते हुये स्वयं भगवान कृष्ण ने कहा है—

'या निशा सर्व भूतानां,
तस्यां जागर्ति संयमी'।

जो सब प्राणियों की रात्रि है वह संयमी के लिये दिन है। रात्रि है अज्ञानावस्था तथा दिन है ज्ञान का आलोक।

७८. मुझे सेवा धर्म प्रिय है

"परोपकारार्थं इदं शरीरम्"

सद् ग्रन्थ सदैव दूसरों को लाभ पहुँचाना ही चरम उद्देश्य मानते आये हैं। दूसरों की सेवा से आत्म सन्तोष होता है। गाँधी जी ने एक कोढ़ी की सेवा की। कुछ लोग तो उसे छूना भी पसन्द न करेंगे। किन्तु गाँधी जी ने उसपर महीनों मरहम पट्टी की। बोर युद्ध में उन्होंने घायलों की सेवा का भार अपने ऊपर लिया। संसार के महान सन्तों ने सेवा को ही धर्म का तत्व माना है। सेवा से मनुष्य क्या भगवान भी वश में हो जाते हैं। पर सेवा व्रत का अर्थ है कष्ट सहने की असीम क्षमता और दूसरों के प्रति अपार प्रेम। गाँधी जी का मानवता के प्रति असीम प्रेम पर-सेवा के रूप में साकार दिखाई पड़ता था।

७९. सेवा से बढ़कर द्रवित करने वाली संसार में कोई चीज़ नहीं है

परहित सरिस धर्म नहिं भाई
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।

—रामचरित मानस

दूसरों का हित करके मनुष्य सर्वप्रिय बन सकता है जैसे महाराज अशोक। दूसरों का अहित करके मनुष्य लोक-शत्रु बन सकता है जैसे कंस।

सेवा का प्रभाव तो भगवान 'राम' पर देखने को मिलता है। सुग्रीव, अंगद, जामवन्त, हनुमान आदि ने उनसे सेवा के ही कारण मनोवाञ्छित वरदान प्राप्त किये।

८०. सफाई संस्कार का प्रतिपादन करती है

'खर को कहा अरगजा लेपन, श्वान नहाये गंग'

—महात्मा सूरदास

जिसके संस्कार ठीक नहीं हैं वह निर्मल नहीं रह सकता। एक मनोवैज्ञानिक ने तो यहाँ तक कह दिया है कि किसी मनुष्य का चरित्र उसके जूतों द्वारा जाना जा सकता है। निर्मल चमकदार जूते उसके निर्मल आदतों का सूचक हैं। निर्मल शरीर उसकी निर्मल आत्मा का सूचक हैं। अंग्रेजी कहावत है—

Cleanliness is next to Godliness.

८१. अविश्वास डर की निशानी है

बादशाह खान ने पार्लियामेन्ट में घोषणा की कि हिन्दू-मुस्लिम दंगों का मुख्य कारण बहुसंख्यकों द्वारा अल्प संख्यकों को शक की नज़र से देखने की प्रवृत्ति है। अविश्बास से डर उत्पन्न होता है और अविश्वास से हिंसा होती है। अतः एक दूसरे पर विश्वास करना चाहिए।

आध्यात्मिक जगत में ईश्वर पर विश्वास न करने से मनुष्य संग्रह जैसा घृणित पाप करता है। पूँजीपति अपने पुत्रों के लिए असीम धन एकत्र करता है कि शायद पुत्र इतना न कमा सके। ईश्वर पर विश्वास न होने के कारण वह डरता रहता है कि लड़का मर न जाय, धन समाप्त न हो जाय अतः वह अनेक दूषित कर्म करता रहता है। ईश्वर पर विश्वास रखना चाहिए।

सींव कि चापि सकै कोउ तासू।
बड़ रखवार रमापति जासू। —रामचरित मानस

८२. सभी धर्मों का समान आदर करना चाहिये

खान अब्दुल ग़फ्फार खाँ गाँधी जी के परममित्र, सहयोगी एवं उसी विचारधारा के अनुयायी हैं। १६ अक्टूबर १९६९ को उन्होंने अहमदाबाद में कहा—

"गाँधी के घर में ही लोग उन्हें भूल गये हैं।"

सभी धर्म मानव मात्र का कल्याण चाहते हैं। धार्मिक असहिष्णुता केवल सियासी है। यह राजनैतिक दाँव-पेंच हैं। धर्मान्धता के शिकार केवल गरीब हिन्दू और गरीब मुसलमान होते हैं। अतः इस पाप से बचना चाहिये और सभी धर्मों का समान आदर करना चाहिये।

८३. जो सत्य जानता है वह परमेश्वर को पहचानता है

सत्यवादी हरिश्चन्द्र की कहानी सभी जानते हैं। महाराजा हरिश्चन्द्र ने सत्य व्रत पालन करने में अनेक कठिनाइयाँ पार कीं। असह्य शारीरिक एवं मानसिक कष्ट सहे। अतः अन्त में ईश्वर को स्वंय उनके पास आना पड़ा—

अगुन, अरूप, अलख, अज जोई,
भगत प्रेम बस सगुन सो होई।

जब सत्य एवं परमेश्वर अभेद हैं तो एक का ज्ञान दूसरे का सहज ज्ञान है। जब इस मायात्मक संसार में ईश्वर ही सत्य है तो सत्य का जान लेना परमेश्वर की स्वयं अनुभूति है।

८४. जहाँ श्रद्धा नहीं वहाँ धर्म नहीं

किसी में जन साधारण से विशेष गुण या शक्ति का विकास देखकर उसके सम्बन्ध में जो स्थायी आनन्द पद्धति हृदय में स्थापित हो जाती है उसे श्रद्धा कहते हैं। श्रद्धा महत्व की आनन्दपूर्ण स्वीकृति के साथ-साथ पूज्य बुद्धि का संचार है।

श्रद्धा का मूल तत्व है दूसरे का महत्व स्वीकार। स्वार्थियों और अभिमानियों के हृदय में श्रद्धा नहीं टिक सकती। ईर्षालु श्रद्धा ऐसे पवित्र भाव को धारण नहीं कर सकते। जहाँ सदाचार के प्रति श्रद्धा अथवा आनन्दपूर्ण कृतज्ञता नहीं होती वहाँ धर्म कहाँ रह सकता है ?

प्रसाद ने कामायनी में मनु (मन) को अन्त में श्रद्धा द्वारा ही ज्ञान का बोध कराया है।

८५. शिक्षा का उद्देश्य है विद्यार्थी को मनुष्य बनाना

'विद्या ददाति विनयम्'।

विनय विद्या का भूषण है। भृगु जी ने भगवान कृष्ण के वक्षस्थल पर लात मारी तो भगवान पूछने लगे कि "महाराज! आपके पैर में चोट तो नहीं आई ?" विनय का क्या ही उत्तम आदर्श है!

विद्या के द्वारा ही इस प्रकार के सद्गुण आ सकते हैं। शिक्षा मनुष्य को विनम्र बनाती है ; अभिमान के दोष से बचाती है ; दूसरों से प्रेम करना सिखाती है या संक्षेप में यों कहिये मनुष्य को मनुष्य बनाती है।

८६. शाकाहार एक स्वाभाविक वृत्ति है

मांसाहारी जन्तु जल चाट कर पीते हैं जैसे कुत्ता, बिल्ली, शेर आदि। मांसाहारी जन्तुओं के कैनाइन टीथ अथवा नुकीले दांत होते हैं। शिकार करने के लिए तेज नाखून होते हैं। किन्तु यह सब बातें मनुष्य में नहीं पाई जातीं अतः मनुष्य एक शाकाहारी पशु है। यह शाकाहारी व्यक्ति जन्मजात है, क्योंकि मनुष्य उन लक्षणों से रहित है जो मांसाहारी जीवों में पाये जाते हैं। साथ ही बापू ने यह प्रमाणित कर दिया है कि मनुष्य प्रत्येक देश तथा जलवायु में शाकाहार पर निर्भर कर सकता है।

८७. शाकाहार से हिंसात्मक विचार नहीं उठते

जैसा खाओ अन्न वैसा बने मन।

तामसी भोजन से हिंसात्मक विचार अवश्य उठते हैं। अतः अहिंसा

व्रत पालन के लिये गाँधी जी ने शाकाहार को आवश्यक बताया। सात्विक भोजन से स्नायु उत्तेजित नहीं होते अतः मन शान्त रहता है। मन में सात्विक विचार उदय होते हैं। इन्द्रियाँ संयमित रहती हैं। विकारों के लिये मन में स्थान नहीं होता। निर्विकार मन किसी प्रकार के पाप में लीन नहीं रहता, फिर हिंसा का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

८८. शाकाहार मनुष्य को निरोग और दीर्घजीवी बनाता है

शाकाहार द्वारा शरीर में बीमारी के जीवाणु पहुँचने की संभावना बहुत कम रहती है। शाकाहार शीघ्र पच जाता है। स्नायु प्रणाली अधिक उत्तेजित नहीं होती अतः बड़ी ही संवेदनशील बनी रहती है। कोई पाचन अंग कार्य बोझ से परेशान नहीं रहता।

इसके विपरीत मांसाहार द्वारा बीमारी के जीवाणु शरीर में प्रवेश पा सकते हैं। पाचक अंग मांस पचाने में अत्यधिक कार्य करते हैं। अतः बुद्धि और स्नायु प्रणाली शिथिल हो जाती है। अधिक कार्य करने के कारण यकृत एवं गुर्दे जल्द नष्ट हो जाते हैं।

अतः नीरोग एवं दीर्घजीवी बनने के लिए शाकाहार पर ही निर्भर रहना चाहिए।

८६. सब नियंत्रणों से बढ़कर आत्म नियंत्रण है

गोस्वामी तुलसीदास ने आत्म नियन्त्रण से उद्भूत सभी गुणों द्वारा एक अजेय रथ निर्मित किया है जो अद्वितीय है :—

सुनहु सखा कहैं कृपा निधाना, जेहि जय होय सो स्यन्दन आना।
सौरज धीरज तेहि रथ चाका, सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका।
बल, विवेक, दम, परहित घोरे, दया, क्षमा, समता रजु जोरे।
ईस भजनु सारथी सुजाना, विरति चर्म संतोष कृपाना।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा, वर विज्ञान कठिन को दंडा।
अमल अचल मन त्रोन समाना, संयम, नियम सिली मुख नाना।
कवच अभेद विप्र गुरु पूजा, एहि सम विजय उपाय न दूजा।
सखा धर्म मय अस रथ जाके, जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके।
महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर।
जाके अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर॥

जिसे अपनी आत्मा पर, अपनी ही इन्द्रियों पर निग्रह नहीं वह अन्य को वश में कैसे कर सकता है। यह आत्मनियन्त्रण का ही बल था कि भगवान कृष्ण ने अपने को ज्ञानियों में जनक कहा, क्योंकि जनक आत्म निग्रही थे। बापू ने स्वयं वही आदर्श ग्रहण किया।

९०. नम्रता के माने हैं तीव्रतम पुरुषार्थ

जो मनुष्य जितना ही महान होता है वह उतना ही विनम्र होता है। इस विषय में इस्लाम धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब के जीवन की एक घटना इस प्रकार है—

मुहम्मद साहब के घर के पास एक बुढ़िया रहती थी। वह इनसे जलती थी और जब मुहम्मद साहब उसके घर के सामने से निकलते थे तो वह उनके ऊपर कूड़ा करकट फेंक देती थी। एक दिन वह बीमार पड़ी। उस दिन मुहम्मद साहब पर किसी ने कूड़ा नहीं फेंका। पता लगाने पर मालूम हुआ कि बुढ़िया बीमार है। इस पर मुहम्मद साहब उसका हाल पूछने और हमदर्दी जाहिर करने के लिये उसके घर गए। उस दिन से बुढ़िया मुहम्मद साहब को वहुत मानने लगी। इस प्रकार विनम्रता ने दुष्टता पर विजय प्राप्त की।

९१. नम्रता मनुष्य का आभूषण है

नम्रता से अहंकार ऐसे दोष का निर्मूलन होता है। ईर्षा उसके पास नहीं फटकती। श्रद्धा भक्ति उसकी सहगामिनी हैं अतः नम्रता मनुष्य का आभूषण है। जो मनुष्य जितना ही ऊँचा उठता है वह उतना ही नम्र

होता है। स्वयं बापू का जीवन इसका प्रतीक है—कहा भी है—

फलों से पुर हुई डाली, हमेशा झुक के रहती है।

६२. धर्म भगवान तक पहुँचने का सेतु है

धर्म का अर्थ है जो धारण करने योग्य हो। धारण वही वस्तु की जा सकती है जो कल्याणकारी हो। नुक़सान पहुँचाने वाली चीज को कोई नहीं धारण करेगा। कल्याणकारी वस्तु दो प्रकार की हो सकती है एक वह जो स्वयं का अथवा व्यक्ति का कल्याण करे। दूसरी वह जो समाज अथवा जीवनमात्र का कल्याण करे। इसी बात को ध्यान में रखकर कुछ सिद्धान्त बनाये गए हैं। इन्हीं सिद्धान्तों के संग्रह को धर्म ग्रन्थ कहते हैं।

श्रीमद्भगवत गीता में इस प्रकार के कल्याणकारी दो सिद्धान्त हैं—

१. कर्म योग :—फल की इच्छा न रखते हुये जीवमात्र के कल्याण के लिये कोई कार्य करना। इससे मनुष्य मोक्ष पा सकता है।

२. सांख्य योग :—"सभी कार्यों का करने वाला ईश्वर है" इस ज्ञान के साथ अपने को एक बड़े विश्व का एक छोटा पुर्जा मानकर कार्य करना ज्ञान-योग है। ज्ञान योगी सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय,पराजय को एक ही मान कर सदा प्रसन्न

एवं सन्तुष्ट रहता है और उसका एकमात्र लक्ष्य आत्मा को परमात्मा से योग कराना ही है और वह देहान्तर के पश्चात उसे प्राप्त भी कर लेता है।

अत: दोनों प्रकार से धर्म ईश्वर तक पहुँचने का सेतु है।

६३. उत्कृष्ट श्रद्धा का नाम धर्म है

सदाचार के प्रति आनन्द एवं कृतज्ञता प्रकट करना, अत्याचार के प्रति क्रोध एवं घृणा प्रकट करना हमारा कर्तव्य है। किसी को दूसरों के कल्याण के लिए भारी स्वार्थ-त्याग करते देखकर उसके प्रति आदर की भावना रखना उत्कृष्ट श्रद्धा है। उसमें हमारा कोई स्वार्थ निहित नहीं है। श्रद्धालु अपने इस भाव में संसार को भी सम्मिलित करना चाहते हैं। श्रद्धा द्वारा हम सत्कर्मों के दृष्टान्तों को आनन्दपूर्वक स्वीकार करते हैं। यही दृष्टान्त समूह जिसके असंख्य अनुयायी हो जाते हैं "धर्म" कहलाता है।

६४. दया से हीन धर्म पाखण्ड है

वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीर पराई जाणे रे,
पर दु:खे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे।

सकल लोग मां सहुने बन्दे, निन्दा न करे केनी रे,
वाच-काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे।
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे,
जिह्वा थकी असत्य न बोले, पर धन नव झाले हाथ रे।
मोह-माया व्यापे नहिं जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मन मां रे,
राम नाम शुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना तन मां रे।
वण लोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निर्वार्या रे,
भणे नरसैवों तेनु दरशन करतां, कुल एको तेर तार्यां रे।

यह है वैष्णव जन की बापू की परिभाषा जिसमें समस्त धर्मों का सार सम्मिलित है। सभी धर्मों में जीव मात्र के प्रति दया को प्रमुख स्थान दिया गया है। वह धर्म के नाम पर ढोंग है जहाँ दया के लिये स्थान न हो।

६६. देश भक्ति मनुष्य का पहला गुण है

जिस को न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है।।

—राष्ट्र कवि मैथली शरण गुप्त

विषुवत रेखा का जो बासी जीता है नित हाँफ हाँफ कर,
रखता है अनुराग अलौकिक वह भी अपनी मातृ भूमि पर,
ध्रुव वासी जो हिम में तम जी लेता है काँप काँप कर,
कर देता है प्राण निछावर वह भी अपनी मातृ भूमि पर।

—राम नरेश त्रिपाठी

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' मातृ-भूमि का स्थान तो स्वर्ग से बढ़कर माना गया है। देश की सेवा मनुष्य को स्वर्गीय सुख ही नहीं स्वर्गीय अमरता भी दिलाती है। आधुनिक युग तो देश-सेवा का ही युग है।

६६. दया के बिना मनुष्य का विकास नहीं हो सकता

दया और धर्म के बिना मनुष्य पूर्णता को प्राप्त नहीं होता। मनुष्य के प्रति ही नहीं पशु-पक्षियों के प्रति भी हमें दया दिखानी चाहिये। महाराजा शिवि ने तो पक्षी के लिये अपना मांस भी दान कर दिया।

क्षुधार्त रन्तिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थि जाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर चर्म भी दिया।

अनित्य देह के लिये अनादि जीव क्या डरे ?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।

—राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त

९७. त्याग एक सात्विक आनंद है

"यदि तू सिद्ध पुरुष होना चाहता है तो जा, जो कुछ धन दौलत तेरे पास हो वह बेचकर कंगालों को दे दे। तुझे अपना खजाना स्वर्ग में सुरक्षित रखा मिलेगा। तब, आ और मेरा अनुयायी हो जा। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि धनवान के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने की अपेक्षा ऊँट का सुई के छेद में से निकल जाना कहीं आसान है।"

—जीसस क्राइस्ट

त्याग से सात्विक आनन्द मिलता है; ईश्वर की प्राप्ति होती है।

९८. सच्चा बहादुर वही है जो ईश्वर के अतिरिक्त किसी से भी न डरे

जिसके हृदय में सर्वशक्तिमान विराजमान हों उसे किसी से डरने की क्या जरूरत है ?

अनाथ कौन है यहाँ त्रिलोक नाथ साथ हैं ;
दयालु दीन बन्धु के बड़े विशाल हाथ हैं ।
अतीव भाग्य हीन है अधीर भाव जो धरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।

—राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त

गुरु नानक से शंहशाह बाबर ने माँगने को कहा तो नानक ने कहा, "तुझसे क्या माँगू तू तो खुद दूसरे से माँगता है' । यह है ईश्वर के प्रति आस्था व अडिग विश्वास जो बाबर के सामने भी बहादुरी का परिचय दे रहा है ।

६६. ईश्वर न काबा में है, न काशी में है वह तो घर घर में व्याप्त है—हर दिल में मौजूद है

'ईश्वरः सर्व भूतानां हृदेषु तिष्ठति अर्जुनः' ।

—श्रीमद्भगवत गीता

हरि व्यापक सर्वत्र समाना,
प्रेम से प्रगट होहि मैं जाना ।

—रामचरित मानस

शाकी शराब पीने दे मस्जिद में बैठ कर।
या वह जगह बता कि जहाँ पर खुदा न हो।

ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी हैं। उन्हें स्थान की सीमा में बांधा नहीं जा सकता। भक्त जहाँ चाहे वहाँ उन्हें पा सकता है।

कबीर की उक्ति भी पठनीय है—

"मोंहि कहाँ तू ढूंढ़त बन्दे, मैं तो तेरे पास में।"

१००. अनुशासन केवल फौजों के लिये नहीं, जीवन के हर क्षेत्र के लिये है

अनुशासन हीन शक्ति बिना ब्रेक की ट्रक है जो स्वयं विनष्ट हो जाती है और साथ में अपने पड़ोसी को भी ले जाती है। तुम सब विद्यार्थी हो। यदि अनुशासन में न रहो तो अध्यापक कक्षा में पढ़ा नहीं सकते। तुम कुछ सीख नहीं सकते। संक्षेप में अनुशासन हीन बालक विद्यार्थी नहीं रह सकता।

इसी प्रकार जी० टी० रोड पर यदि सभी लोग मनमानी ढंग से चलने लगें तो चलना कठिन हो जायगा। यदि शासन अपना अनुशासन

नहीं रख सकता तो सरकार असफल हो जायगी। देश उन्नति नहीं कर सकता।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम चक्रवर्ती महाराज दशरथ के पुत्र थे। मिथिला पति जनक के अतिथि थे। किन्तु बिना माली की आज्ञा पुष्पवाटिका से पुष्प नहीं तोड़े—

चहुँ दिशि चितै पूँछि माली गन
लगे लेन दल फूल मुदित मन।

अतः अनुशासन राजाओं महाराजाओं से लेकर साधारण व्यक्ति तक के लिये आवश्यक है।

समापन

आज गाँधी जी के १०० वाक्यों की व्याख्या पूर्ण हुई। गाँधी जी गंगा जी के समान हितकारी एवं पवित्र हैं। जिन लोगों ने गाँधी विचार धारा में स्नान किया, वे पवित्र हुये। जिस प्रकार इंजीनियर्स ने गंगा जल को नहरों द्वारा दूर-दूर के स्थानों तक उपलब्ध कराया है उसी प्रकार गाँधी दर्शन के विज्ञ-जन आचार्य विनोवा, पं० जवाहर लाल नेहरू, श्री लाल बहादुर शास्त्री आदि ने गाँधी सन्देश सारे विश्व में फैलाया। अपनी-अपनी बुद्धि और क्षमता के अनुसार विश्व के लोग इस पावन विचारधारा से लाभ उठा रहे हैं। मैं तो साधारण गंगा स्नान करने

वाला यात्री हूँ जिसने इस धारा से छोटी गंगा जली भर कर अपने विद्यार्थियों पर १०० बूंदें छिड़कने का प्रयास किया है। हो सकता है इससे प्रभावित होकर कुछ विद्यार्थी इस पावन विचारधारा तक पहुँच कर उसके योग्य पुजारी बन सकें और विश्व को शान्ति प्रदान कर सकें।

रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम।
ईश्वर अल्ला तेरे नाम, सब को सन्मति दे भगवान ॥